ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 18 सहयोग शुल्क : रु.1 जून 2018

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

'सरकार में दिव्यांग लोगों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने की जरूरत'

~ केंद्र सरकार, भारत

जीवन एक चट्टान है, उसका डटकर मुकाबला करें|

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है|
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा|
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है|
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

दोस्तों,

फ़िर से बच्चों के वैकेशन की गाड़ी पटरी पर आ चुकी है| जून माह, गर्म हवाओं से त्रस्त हम सब लोगों ने वैकेशन बिताया है| बच्चों के लिए फ़िर से स्कूल व एडमिशन शुरू हो चुके होंगे| ख़ासकर, जो भी बच्चें पहली बार विद्यालय का गेट देखने जा रहे है, उनके मातापिता को मेरी एक अपील है की अपने बच्चों को खूब पढ़ाएं| शिक्षित बनाएं, उत्साह दें, लेकिन भविष्य का डर कभी न दिखाएँ|

सभी बच्चें अपने साथ ईश्वर का दिया हुआ जादुई पिटारा लेकर ही आता है, जिसमें कुछ न कुछ एसी शक्ति छूपी होती है जो वह भी नहीं जानता| बस, हमें उस शक्ति को ऑक्सिजन देना है, जगाना है, और उनके जीवन में राहबर की भूमिका अदा करनी है|

खैर, आपका प्यार हमें हर महीने पत्र के द्वारा मिल रहा है| दिव्यांगो के हिताधिकारों को केंद्रस्थान में रखकर यह मासिक पत्रिका प्रकाशित करने की हमें बेहद ख़ुशी भी है| इस बार हमने पार्किंसंस नामक रोग की विशेष जानकारियां दी है| विशेषत: विश्व के सबसे महान बोक्सिंग चेम्पियन मोहम्मद अली के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी गई है| सरकार द्वारा दिव्यांगजनों के हित में लिए जानेवाले निर्णयों पर भी प्रकाश डालने का प्रयास हमने किया है|

"चट्टान को तोड़ो
वह और सुन्दर हो जाएगी" ~ केदारनाथ सिंह

जीवन एक चट्टान है, उसका डटकर मुकाबला करें|

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जून : 2018, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 02 अंक : 06

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउन्डेशन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

००१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

मो. 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6

079 26405200

गुजरात सरकार दिव्यांगो के लिए खास नीति की घोषणा करेगी

दिव्यांग जन अपना जीवन अन्य सामान्य लोगों के हिसाब से सुनिश्चित कर सकें, और जीवन निर्वाह कर सके उसके लिए सरकार पुख्ता कदम लेने की तैयारी में है| केंद्र सरकार द्वारा २०१६ में जनहित में जारी किए गए दिव्यांगजन आरक्षित बिल के १८ महीने बाद यह घटना अमल में आए एसी संभावना है|

नीति के एक हिस्से के रूप में, दिव्यांगजनों की सुलभता सुनिश्चित करने के लिए, सरकारी और निजी दोनों सार्वजनिक भवनों में रैंप अनिवार्य कर दिए जाएंगे।

"दिव्यांग नीति संसद द्वारा पारित विधेयक पर आधारित है। यह नीति में विधेयक के प्रावधान शामिल किए हैं| सरकारी नौकरियों में दिव्यांगो के लिए आरक्षण 3% से 4% तक और उच्च शिक्षा के संस्थानों में 4% से 5% तक बढ़ाया जाएगा। इसी प्रकार, विभिन्न विकास योजनाओं के तहत 5% अनिवार्य आवंटन, नीति के अनुसार दिव्यांगजनों को प्रदान किया जाएगा।

इसी प्रकार, राज्य स्तर पर शीर्ष नीति बनाने वाले नियम के रूप में कार्य करने के लिए दिव्यांगता पर एक राज्य सलाहकार बोर्ड स्थापित किया जाएगा, जबकि दिव्यांग व्यक्तियों की स्थानीय चिंताओं को हल करने के लिए जिला स्तरीय समितियां गठित की जाएंगी।

विश्व दिव्यांग दिवस पर दिए जायेंगे पुरस्कार, 30 जून तक किये जा सकेंगे आवेदन...

भारत सरकार के दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा 03 दिसम्बर 2018 को विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर दिये जाने वाले राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए सम्बन्धित लोगों से आवेदन माँगे गये हैं। प्रदेश के दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा इस सम्बन्ध में जारी परिपत्र के अनुसार इच्छुक व्यक्ति इन राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए अपने आवेदन सम्बन्धित ज़िले के दिव्यांगजन सशक्तीकरण कार्यालय में जमा कर सकते हैं।

ज़िला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी द्वारा इन आवेदनों को ज़िलाधिकारी की संस्तुति के साथ आगामी 30 जून तक दिव्यांगजन सशक्तीकरण निदेशालय को उपलब्ध कराना होगा। ये राष्ट्रीय पुरस्कार जिन 13 निर्धारित श्रेणियों में दिये जायेंगे, उनमें सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग कर्मचारी, स्वनियोजित, सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता तथा प्लेसमेण्ट अधिकारी या एजेन्सी, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कार्यरत सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, संस्था, प्रेरणास्रोत, दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में सुधार लाने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपयोगी अनुसंधान या नवप्रवर्तन या उत्पाद विकास, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सृजित किया गया उत्कृष्ट बाधामुक्त वातावरण, पुनर्वास सेवाएँ प्रदान करने वाले ज़िले, राष्ट्रीय दिव्यांग वित्त और विकास निगम की सर्वश्रेष्ठ राज्य चैनेलाइज़िंग एजेन्सी, सृजनशील व्यस्क दिव्यांग व्यक्ति, उत्कृष्ट सृजनशील दिव्यांग बच्चे, सर्वश्रेष्ठ ब्रेल प्रेस, सर्वश्रेष्ठ सुगम्य वेबसाइट तथा सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ी शामिल हैं।

इस राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी तथा आवेदन पत्र का प्रारूप भारत सरकार के दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

वॉइस फॉर दिव्यांग

गुजरात का ये टॉपर बना मिसाल, नहीं थे दोनों हाथ और पैर, परीक्षा में 98.53% स्कोर किया

मन में कुछ कर दिखाने की इच्छा है तो कोई भी परेशानी आपका रास्ता नहीं रोक सकती| गुजरात बोर्ड की 10वीं कक्षा में पढ़ने वाला शिवम इसकी जीती जागती मिसाल बन गया है| शिवम के न तो हाथ हैं और न ही एक पैर| अपनी इस हालत से हार मानने की जगह शिवम ने खुद को और मजबूत किया और दिव्यांगता को खुद पर हावी नहीं होने दिया| अपनी मेहनत और लगन से शिवम ने सभी विषय में बेहतरीन नंबर पाते हुए टॉप किया है|10वीं बोर्ड में शिवम को 98.53 प्रतिशत अंक मिले हैं|

गुजरात सेकेंडरी एंड हायर सेकेंडरी एजुकेशन बोर्ड की 10वीं कक्षा के रिजल्ट घोषित किए गए| इस परीक्षा में करीब 10 लाख स्टूडेंट्स शामिल हुए थे| पास होने वाले छात्रों में से 6015 दिव्यांग विद्यार्थी थे| छोटी उम्र में हाथ और एक पैर खो देने वाला शिवम इस लिस्ट में टॉप पर है|

पतंग उड़ाने के दौरान हुआ हादसा और खो दिए हाथ पैर

वडोदरा शहर के बरानपुरा इलाके के विजयनगर निवासी सोलंकी परिवार का बेटा शिवम दूसरों के लिए मिसाल बन गया है| शिवम जब 11 साल का था तब एक दिन वो छत पर पतंग उड़ाने के लिए गया| इस दौरान वो पास ही लटक रहे एक बिजली के तार की चपेट में आ गया| करंट के कारण शिवम के हाथ-पैर बुरी तरह झुलस गए| उसकी जान बचाने के लिए डॉक्टरों को उसके दोनों हाथ और एक पैर काटना पड़ा|

माता-पिता ने दी हिम्मत

हादसे के बाद सफाई कर्मचारी के रूप में काम करने वाले शिवम के पिता और उसकी गृहणी मां के पास अपने बेटे की स्थिति को स्वीकारने के अलावा कोई रास्ता नहीं था| अपना दुख व्यक्त करने और उसकी कमियों पर ध्यान देने की जगह वे शिवम की हिम्मत बनें| शिवम की मां ने उसे बचे हुए हाथ के हिस्से में पट्टी बांध उसमें पैन फंसाकर लिखना सिखाया| धीरे-धीरे शिवम की इस पर पकड़ बनती गई| माता-पिता की हिम्मत का असर शिवम पर भी हुआ और उसने पढ़ाई में अच्छा परफॉर्म करना शुरू कर दिया|

शिवम को दसवीं में मिली सफलता पर माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं है| उनके घर में जश्न सा माहौल है| वहीं अपनी खुशी जाहिर करते हुए शिवम ने बताया कि वो बड़े होकर डॉक्टर बनना चाहता है, ताकि वो दूसरों की मदद कर सके|

'दिव्यांग कैदियों के लिए फिट नहीं तिहाड़'

हाई कोर्ट के निर्देश पर दिव्यांगों की खास जरूरतों के मद्देनजर सरकारी बिल्डिंगों और सार्वजनिक जगहों का ऑडिट जारी है। इसी कड़ी में जब तिहाड़ जेल का डिसेबिलिटी ऑडिट कराया गया तो वह भी इस टेस्ट में फेल हो गई। हाई कोर्ट ने सरकार को निर्देश दिया है कि वह जेल परिसर में मौजूद इन खामियों की जांच कर उन्हें जल्द से जल्द दूर करने के लिए ठोस कदम उठाए।

एक्टिंग चीफ जस्टिस गीता मित्तल और जस्टिस सी. हरि शंकर की बेंच ने डायरेक्टर जनरल, प्रीजन को निर्देश देते हुए कहा कि वह सुनिश्चित करें कि जांच में जो खामियां पाई गईं उनकी जांच कर उन्हें जल्द से जल्द दूर किया जाए। कोर्ट ने सरकार से इस आदेश की कंप्लायंस रिपोर्ट भी मांगी है। हाई कोर्ट के निर्देश पर राष्ट्रीय राजधानी की जेलों में इस जांच में लगे निपुण मल्होत्रा को हाई कोर्ट ने कहा कि वह इसी तरह रोहिणी और मंडोली जेल की भी जांच करें। मामले में वह याचिकाकर्ता भी हैं। मल्होत्रा ने हाई कोर्ट में तिहाड़ जेल की ऑडिट रिपोर्ट पेश करते हुए तमाम ऐसी खामियों को उजागर किया जिसने एशिया की इस सबसे बड़ी जेल को भी दिव्यांगों की खास जरूरतों के प्रतिकूल साबित कर दिया।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने अधिकारियों को कमियों की जांच करने और जेल जाने या अलग-अलग लोगों के लिए तिहाड़ जेल बनाने के लिए और अधिक सुलभ बनाने का निर्देश दिया है।

कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश गीता मित्तल और न्यायमूर्ति सी. हरि शंकर की एक खंडपीठ को सूचित किया गया कि तिहाड़ जेल के लिए दिव्यांगता लेखा परीक्षा निपुन मल्होत्रा ने की थी, जो निप्पमान फाउंडेशन के सह-संस्थापक हैं जो स्वास्थ्य और दिव्यांग क्षेत्र के लोगों के लिए वकालत के क्षेत्र में काम करते हैं। वकील ने यह भी कहा कि तिहाड़ दिव्यांग हितैषी नहीं है और ढांचे में बहुत कुछ करने की जरूरत है। निपुन मल्होत्रा द्वारा कुछ

महत्वपूर्ण कमियों की ओर इशारा किया गया है, जो दिव्यांग लोगों के परिप्रेक्ष्य से जेल जाने या कैदियों के रूप में दर्ज होने के परिप्रेक्ष्य से जांच के लायक हैं। महानिदेशक, जेल यह सुनिश्चित करेंगे कि मल्होत्रा द्वारा दी गई कमियों की जांच की जाएगी और जल्द से जल्द उचित कदम उठाए जाएंगे और इस अदालत के समक्ष एक अनुपालन रिपोर्ट दायर की जाएगी।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

जहरीले पानी ने यूपी के इस गांव को बना दिया दिव्यांग, शादी करने से भी कतराते हैं लोग

जहरीले पानी ने यूपी के इस गांव को बना दिया दिव्यांग, शादी करने से भी कतराते हैं लोग

आजादी की लड़ाई में जिस गांव में फारवर्ड ब्लाक की स्थापना करके नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने युवाओं में जोश भरा था, आज उसी गांव के लोग तिल तिलकर मरने को मजबूर हैं। ढाई सौ की आबादी वाले इस गांव में डेढ सौ दिव्यांग हैं। गांव में फ्लोराइड युक्त जहरीला पानी इस कदर काल बन चुका है कि अब तक दो दर्जन लोगों की समय से पहले मौत हो चुकी है। जो बचे हैं वह भी चलने-फिरने में लाचार हैं।

जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर हसनगंज तहसील के मकुर गांव के मार्क्स नगर कस्बे के लोगों की जिंदगी प्रशासनिक उदासीनता की वजह से किसी तरह से घिसट रही है। एक राज्यपाल और चार विधायक इस गांव से चुनकर सत्ता के गलियारे तक पहुंचे फिर भी गांव शुद्ध पेयजल के लिए तरस रहा है। गांव में दो साल से शहनाई नहीं बजी है। पानी की एसी दहशत है कि लोग अपनी बेटियों की शादी इस गांव में करने से कतराते हैं। गांव की स्थिति सुधारने में प्रशासन और मेडिकल साइंस भी पूरी तरह से फेल है। यहां का हर आदमी टेढ़ा-मेढ़ा और कमजोर दिखाई देता है।

नेताजी ने बसाया था मार्क्स नगर

मार्क्स नगर की स्थापना सुभाष चंद्र बोस ने 17 मई 1938 को की थी । तीन दिन तक प्रांतीय सम्मेलन किया जिसमें 50 हजार युवा जुटे। सम्मेलन में फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की थी। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में युवाओं में जोश भरा था।

50 की उम्र में ही 90 की उम्र जैसे दिखने लगते हैं

गांव में लगभग 30 घर हैं और लगभग ढाई सौ की आबादी है ।हर आदमी के 20 साल बाद पैर टेढ़े होने लगते हैं । ज्यादातर

महिलाओं की 30 साल के बाद कमर झुकने लगती है। 50 साल तक पहुंचते-पहुंचते यह सभी महिला पुरुष इतने बूढ़े हो जाते हैं कि देखने में 90 साल के लगते हैं ।

सरकार ने नहीं दिया ध्यान

जल निगम ने राजीव गांधी मकूर मलाव पेयजल समूह योजना के अंतर्गत गांव से 5 किलोमीटर दूर एक पानी की टंकी की स्थापना की थी। करीब दो साल पानी की सप्लाई हुई। पिछले 2 साल से मार्स नगर और मकूर गांव के अंदर पानी नहीं पहुंच रहा है।

पूर्व राज्यपाल, तीन विधायक दिए

गांव के सजीवनलाल चुनाव जीतकर 1957 में विधायक बने। 1967 महिपाल सिंह शास्त्री एमएलसी बने। 1977 मे पुरवा विधान सभा से चन्द्रभूषण सिंह यादव, हडहा विधानसभा से हेमराज लोधी महोना से महिपाल सिंह शास्त्री चुनाव जीतकर विधायक बने । बीपी सिंह सरकार में महिपाल सिंह शास्त्री को गुजरात का राज्यपाल बनाया गया था।

'सरकार में दिव्यांग लोगों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने की जरूरत'

ज्यादातर लोगों को 20 से 50 साल की उम्र के बीच एम.एस. बीमारी का पता चलता है। महिलाएं इस बीमारी से पुरुषों की तुलना में दो से तीन गुणा अधिक पीड़ित होती हैं।

सरकार के स्तर पर दिव्यांग लोगों के प्रतिनिधित्व की सख्त जरूरत है, ताकि दिव्यांगता कानून में और अधिक दिव्यांगता को शामिल किया जा सके और दिव्यांग लोगों के कल्याण के लिए और अधिक योजनाएं चलाई जा सकें।

यह बात यहां मल्टीपल स्केलेरोसिस सोसाइटी ऑफ इंडिया (एम.एस.एस.आई.) द्वारा आयोजित 'विश्व मल्टीपल स्केलेरोसिस दिवस' का आयोजन, केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के तहत दिव्यांग लोगों के सशक्तिकरण विभाग के निर्देशक के. विक्रम सिम्हा राव ने राजधानी में मंगलवार को 'विश्व मल्टीपल स्केलेरोसिस दिवस' इसका आयोजन किया। इस आयोजन में सरकारी अधिकारियों के साथ ही क्षेत्र के विशेषज्ञ और इस बीमारी के मरीज एक मंच पर जुटे। मल्टीपल स्क्लेरोसिस (एम.एस.) एक ऑटोइम्यून बीमारी है, जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में तंत्रिका कोशिकाओं की सुरक्षात्मक परत को नुकसान पहुंचाती है।

एम.एस.एस.आई. भारत में स्क्लेरोसिस से प्रभावित लोगों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन और बीमारी से निपटने में मदद करने के लिए समर्पित है।

बयान में कहा गया है कि ज्यादातर लोगों को 20 से 50 साल के उम्र के बीच एम.एस. बीमारी का पता चलता है। महिलाएं इस बीमारी से पुरुषों की तुलना में दो से तीन गुणा अधिक पीड़ित होती हैं। भारत में 16 साल से भी कम उम्र के बच्चों में एम.एस. की बीमारी पाई जा रही है। वित्त वर्ष 2003-04 में देश में किए गए अंतिम अध्ययन के मुताबिक एम.एस. बीमारी के शिकार मरीजों की संख्या 2,00,000 है। उसके बाद से इस पर कोई अध्ययन नहीं किया गया। ऐसा माना जाता है कि अब यह आंकड़ा 2 से 4 गुना बढ़ गया होगा जो दुनिया के कुल स्क्लेरोसिस रोगियों का 10 फीसदी हो सकता है।

इस मौके पर के. विक्रम सिम्हा राव ने कहा, सरकार के स्तर पर दिव्यांग लोगों के प्रतिनिधित्व की सख्त जरूरत है ताकि दिव्यांगता कानून में और अधिक दिव्यांगता को शामिल किया जा सके और दिव्यांग लोगों के कल्याण के लिए और अधिक योजनाएं चलाई जा सकें। सरकार ने केंद्रीकृत डेटा प्रबंधन प्रणाली लागू करने की योजना बनाई है, जिससे दिव्यांग लोगों की संख्या, उनकी दिव्यांगता की श्रेणी और उनके काम करने की क्षमता का हिसाब रखा जा सके, ताकि लाभार्थियों को सुविधा प्रदान करने के लिए अधिकारी कहीं से भी इस केंद्रीकृत डेटा को प्राप्त कर सकें।

> एम.एस. पर अभी बहुत अधिक शोध किए जाने की जरूरत है। एम.एस. मरीज और उसके परिवार को मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत होना चाहिए।

उन्होंने बताया, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने यह प्रस्ताव दिया है कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (एनएचपीएस) आयुष्मान भारत में 20 अन्य दिव्यांगता के साथ ही मल्टीपल स्केलोरेसिस को भी शामिल किया जाए, ताकि एम.एस. के मरीज भी केंद्र सरकार की स्वास्थ्य योजना का लाभ उठा सकें। इससे एम.एस. रोगियों को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

इस मौके पर एम्स के न्यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. कामेश्वर प्रसाद ने कहा, एम.एस. पर अभी बहुत अधिक शोध किए जाने की जरूरत है। पहले जब एमआरआई मशीनें नहीं थीं, तो एम.एस. का पता लगाना मुश्किल था और इसे दुर्लभ बीमारी माना जाता, लेकिन एमआरआई जांच से एम.एस. के मरीजों का पता आसानी से चल जाता है। एम.एस. मरीज और उसके परिवार को मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत होना चाहिए, क्योंकि इस बीमारी का प्रभाव मरीज के दिमाग, आत्मविश्वास और उसके रोजगार पर पड़ता है, जिससे उसके परिवार और दोस्तों को भी परेशानी होती है। ऐसे में यह एम.एस.एस.आई., निजी संस्थानों और सरकार को इस बीमारी की शोध के लिए साथ आने का समय है, ताकि निवारक उपाय किए जा सकें और मरीजों को एम.एस. की किफायती जेनेरिक दवाएं मुहैया कराई जा सकें।

दिल्ली सरकार में दिव्यांग लोगों के मामले के आयुक्त टी. डी. धारियाल ने कहा, इतने सालों में हमने देखा है कि कोई दिव्यांग व्यक्ति जिस समस्या का सबसे अधिक सामना करता है, वह है पहुंच में आसानी की समस्या। एम.एस. को लेकर काफी अधिक जागरूकता फैलाने की जरूरत है और एम.एस.एस.आई. जैसे संगठनों को आगे आकर जागरूकता अभियान चलाना चाहिए।

एम.एस.एस.आई. की राष्ट्रीय सचिव रेणुका मालाकेर ने बताया कि यदि हम सभी महत्वपूर्ण हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करना जारी रखते हैं तो हम अंतत: एक एम. एस. रजिस्ट्री बनाने में सक्षम होंगे जो अनुसंधान और सस्ते उपचार के लिए आधार तैयार करेगा।

वॉइस फॉर दिव्यांग

‘गुरु गोविंद दोउ खड़े’ दोहे को साबित करे ऐसे गुरु की बात

दिव्यांग शिष्य ‘ध्रुव’ की २४ साल तक लगातार सेवा करनेवाले गुरु का सन्मान

दिव्यांग शिष्य ध्रुव पटेल जब ३ साल के थे तबसे उसको विशेष तालीम दी जाती थी, आज वो २८ साल का है और वो कम्प्यूटर चलाना उपरांत बहोत से कामो में निपुण हे| गुरु निलेश पंचाल की यह उपलब्धि को इंडिया बुक ऑफ़ रिकॉर्ड,एशिया पेसिफिक रिकॉर्ड और नेशनल बुक ऑफ़ रिकॉर्ड में गौरवान्वित स्थान मिला हे|

शहर के मेमनगर स्थित विस्तार में नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट के संचालन से चलती स्कूल ‘डो. हरिकृष्ण डायाभाई स्वामी स्कूल फॉर मेन्टली चेलेंज्ड’ के संचालक निलेशभाई पंचालने मानसिक विकलांग शिष्य ध्रुव पटेल की पिछले २४ साल से अविरत सेवा और जरूरी सभी तरह की तालीम देकर संयम, समर्पितता और गुरुपरंपरा का एक उमदा उदाहरण हमारे बीच रखा है| इतने लंबे समय तक अपने शिष्य की सेवा, मदद और तालीम देने के लिए गुरु निलेश पंचाल को इंडिया बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, एशिया पेसिफिक रिकॉर्ड और नेशनल बुक ऑफ़ रिकॉर्ड में गौरवान्वित स्थान मिला है| उनके अनोखे रिकॉर्ड के बारे में ख़ुशी व्यक्त करते उन्होंने कहा की - “ध्रुव जेसे दिव्यांग बच्चो की सेवा करना ही उनके जीवन का लक्ष्य हे| ध्रुव पटेल डाउन सिंड्रोम नाम की बीमारी से पीड़ित मानसिक दिव्यांग है| वो तीन साल का था, तबसे में उसे तालीम दे रहा हूँ| उस समय वो कुछ बोलता भी नहीं था और वो बहुत हायपर था तो कोई एक जगह बैठता भी नहीं था| जैसे वह थोडा बड़ा हुआ ऐसे वो दौड़ के छत पे चला जाता और कूदने का प्रयास करता, पैर जुलाके बैठ जाना जैसी बहोत हरकते करता था| मेरे लिए ध्रुव को ट्रेनिंग देना बहोत ही मुश्किल था पर मैंने हिम्मत ना हारी और ध्रुव की तालीम चालू रखी| आज ध्रुव २८ साल का युवा हे और वो अभी कही स्कूल में कम्प्यूटर सिखाने जा रहा है| और वो अपने जैसे दिव्यांग बच्चो को अपने रोजिंदा जीवन के काम

करने में मदद भी कर रहा है| ध्रुव एक दिन में दीवाली के लिए २००० दीये बना सकता हे ये उसका हुनर है| दिव्यांग बच्चो के टीचर निलेशभाई पंचालने और बताया की उनकी स्कूल ने अब तक मुंबई ट्रिप, मनाली ट्रेकिंग कैंप, जुम्बा डांस, हाईटेज कंच(विश्व की सबसे ऊँची कांखघोड़ी), हनुमानचालीसा के २५ शो, ऐसे कुल मिलाकर पांच वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाये है| हमारे लिए बहोत गर्व की बात है की ध्रुव पटेलने खेलमहाकुम्भ में ६०किलो वेटलिफ्ट करके पॉवर लिफ्टिंग स्पर्धा में सबको प्रभावित कर दिया था| स्कूल की तरफ से ध्रुव को आनेवाले दिनों में मल्टीमीडिया और डेटा एन्ट्री के प्रोजेक्ट की ट्रेनिंग के लिए बेंगलोर भेजने की बाते चल रही है| ध्रुव एक प्रतिभावान बालक हे, वो संस्था का नाम भविष्य में रोशन करेगा|”

क्या सिर्फ नाम देकर संतोष मान लेना है?

देश में ‘दिव्यांग’ वर्तुल तक का प्रबंध नही हे, तो फिर उस तरफ की ‘विकलांगता’ कब बदलेंगी?

दिव्यांग बच्चो को समर्पित संस्था के शिक्षक और संचालक निलेशभाई पंचालने एक महत्वपूर्ण बात बताते हुए कहा की, अहमदाबाद शहर के कोई भी चार रास्ते, सर्कल, ब्रिज के रास्ते को दिव्यांग नाम अभी तक दिया नहीं गया| यह बात का बड़ा दुःख हे| प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने विकलांग के लिए बहोत सुंदर शब्द दिव्यांग दे दिया, लेकिन अहमदाबाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन और राज्य सरकार के सत्ताधीश की और से कोई रास्ते, ब्रिज और बगीचे को दिव्यांग पार्क या दिव्यांग सर्कल ऐसा कोई नाम क्यों नहीं दिया गया? मैंने खुद ने अहमदाबाद में सर्कल, रोड, बगीचे को दिव्यांग नाम देने के बारे में अहमदाबाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन स्टैंडिंग कमिटी के चेरमैन सहित के सत्ताधारी को रजुआत की, लेकिन कुछ भी परिणाम नहीं आया| शहर में बगीचे, रास्ते, चोराहा, ब्रिज का नाम दिव्यांग रख के, उन मे उनके उपयोगी उपकरणों को रखने से, लोगो में दिव्यांग शब्द का व्याप बढेगा और दिव्यांग बच्चो की प्रतिभा सरलता से खिलेगी| हम जितना सोच रहे है उतना आसान नहीं है दिव्यांग बालको का जीवन| उनके लिए हररोज जीवन में हर एक दिन नया पड़कार है और वह उससे लड भी रहे है|बढती उम्र के साथ उनके सर से जब मातापिता का साया चला जाता हे तब उनका कौन? ऐसे दिव्यांग बच्चो के लिए पिछली उम्र मे वृद्धावस्था में रहने के लिए पूरे भारतभर में कोई आश्रम तक नही है|तभी तो ऐसे दिव्यांग वृद्ध के लिए कोई अनोखा आश्रम बनाने की तीव्र इच्छा है, ऐसा भी निलेशभाई ने बताया|

वॉइस टू
दिव्यांग

दिव्यांग युवक ने 28 दिन में मोटरसाइकिल पर पूरा किया कश्मीर से कन्याकुमारी तक का कठिनाईभरा सफ़र

“**विश्वास** वह शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश लाया जा सकता है” कहते है अगर कुछ करने का जनून हो तो इंसान क्या नही कर सकता और अगर कोई दिव्यांग ये अदभुत काम करे, अपने दिव्यांग भाइयों की शक्ति बने तो भगवान भी उनका साथ देते हैं। पानीपत के दिव्यांग अमित ने दिव्यांगों की सशक्तिकरण के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक की यात्रा सभी के लिए प्रेरणा बन रही है। पानीपत के लोगों ने अमित के वहां पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया।

पानीपत का अमित जो कि बचपन से दिव्यांग हैं वह अपने दोनो पैरों से चल नही सकता। उसने दिव्यांगों को हौसला देने के लिए और उन्हें बताने के लिए कि दिव्यांग किसी से कम नही। वो भी कुछ ठान ले तो कुछ भी कर सकते है। उसने 28 अप्रैल को पानीपत से मोटरसाइकिल से कश्मीर से कन्याकुमारी की यात्रा आरम्भ की। अमित ने बताया कि 28 दिन की इस यात्रा में मैने 14 राज्यों, 3 केन्द्रीय प्रशासित राज्यों व 100 शहरों को पार किया। इन शहरों में दिव्यांगों से मिला उन्होंने मुझे हौसला दिया और सम्मानित किया। उसने कहा कि इस यात्रा का उद्देश्य दिव्यांगों का सशक्तिकरण था। पानीपत समाजसेवियों का कहना है कि अमित ने दिव्यांग होकर जो कार्य किया हैं यह बड़े गौरव की बात हैं। इन्होंने दूसरे लोगों के लिए उदाहरण पेश किया है।

पार्किंसन रोग (Parkinson's disease or PD) केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का एक रोग है जिसमें रोगी के शरीर के अंग कंपन करते रहते हैं।

पार्किन्सोनिज्म का आरम्भ आहिस्ता-आहिस्ता होता है। पता भी नहीं पड़ता कि कब लक्षण शुरू हुए। अनेक सप्ताहों व महीनों के बाद जब लक्षणों की तीव्रता बढ़ जाती है तब अहसास होता है कि कुछ गड़बड़ है। डॉक्टर जब हिस्ट्री (इतिवृत्त) कुरेदते हैं तब मरीज़ व घरवाले पीछे मुड़ कर देखते हैं याद करते हैं और स्वीकारते हैं कि, हां सचमुच ये कुछ लक्षण, कम तीव्रता के साथ पहले से मौजूद थे। लेकिन तारीख बताना सम्भव नहीं होता।

कभी-कभी किसी विशिष्ट घटना से इन लक्षणों का आरम्भ जोड़ दिया जाता है - उदाहरण के लिये कोई दुर्घटना, चोट, बुखार आदि। यह संयोगवश होता है। उक्त तात्कालिक घटना के कारण मरीज़ का ध्यान पार्किन्सोनिज्म के लक्षणों की ओर चला जाता है जो कि धीरे-धीरे पहले से ही अपनी मौजूदगी बना रहे थे।

बहुत सारे मरीजों में पार्किन्सोनिज्म रोग की शुरूआत कम्पन से होती है। कम्पन अर्थात् धूजनी या धूजन या ट्रेमर या कांपना।

पार्किंसन किसी को तब होता है जब रसायन पैदा करने वाली मस्तिष्क की कोशिकाएँ गायब होने लगती हैं|

पार्किंसन रोग के लक्षण

इस रोग के लक्षण और संकेत हर व्यक्ति में भिन्न हो सकते हैं। शुरुआती संकेत कम हो सकते हैं और आसानी से किसी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित नहीं करते हैं। इसके लक्षण अक्सर आपके शरीर के एक तरफ के हिस्से पर दिखने शुरू होते हैं और स्थिति बहुत खराब हो जाती है। इसके बाद पूरा शरीर लक्षणों से प्रभावित होने लगता है।

पार्किंसन रोग के संकेत और लक्षणों में निम्न शामिल हो सकते हैं –

कंपन – कंपकपाना या हिलना आमतौर पर आपके हाथ या उंगलियों से शुरू होता है। इसके कारण आपका अंगूठा और तर्जनी उंगली के एक-दूसरे से रगड़ने शुरू हो सकते हैं, जिसे "पिल-रोलिंग ट्रेमर" (Pill-Rolling Tremor) कहते हैं। पार्किंसन रोग में आराम की स्थिति में आपके हाथ में होने वाली कंपकपी है।

धीमी गतिविधि (ब्रैडीकीनेसिया) – समय के साथ, यह बीमारी आपके हिलने-डुलने और काम करने की क्षमता को कम कर सकती है, जिसके कारण एक आसान कार्य को करने में भी कठिनाई होती है और समय अधिक लगता है। चलते समय आपकी गति धीमी हो सकती है या खड़े होने में कठिनाई हो सकती है। इसके अलावा आप पैरों को घसीट कर चलने की कोशिश करते हैं, जिससे चलना मुश्किल हो जाता है।

कठोर मांसपेशियां – किसी भी हिस्से में मांसपेशियों में अकड़न हो सकती है। कठोर मांसपेशियां आपकी गति को सीमित कर सकती हैं और दर्द का कारण बन सकती हैं।

बिगड़ी हुई मुद्रा और असंतुलन – पार्किंसन रोग के परिणामस्वरूप आपका शरीर झुक सकता है या असंतुलन की समस्या हो सकती है।

स्वचालित गतिविधियों की हानि – पार्किंसन बीमारी में, अचेतन (Unconscious) कार्य करने की क्षमता में कमी आ सकती है, जिनमें पलकें झपकाना, मुस्कुराना या हाथों को हिलाते हुए चलना शामिल हैं। बात करते समय आपके चेहरे पर ज़्यादा समय के लिए हाव भाव नहीं रह सकते।

आवाज़ में परिवर्तन – पार्किंसन रोग के परिणाम स्वरूप उच्चारण सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। आपका स्वर धीमा, तीव्र और अस्पष्ट हो सकता है या आपको बात करने से पहले हिचकिचाहट हो सकती है। सामान्य संक्रमण की तुलना में आपकी आवाज़ और ज़्यादा खराब हो जाती है। स्वर और भाषा के चिकित्सक आपकी उच्चारण समस्याओं का निवारण करने में मदद कर सकते हैं।

लिखावट में परिवर्तन – लिखावट छोटी हो सकती है और लिखने में तकलीफ हो सकती है।

पार्किंसन रोग का उपचार

पार्किंसन रोग को ठीक नहीं किया जा सकता, लेकिन दवाएं आपके लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं। कुछ गंभीर मामलों में, सर्जरी की सलाह दी जा सकती है।

आपके डॉक्टर जीवन शैली में बदलाव करने, विशेष रूप से एरोबिक व्यायाम की सिफारिश भी कर सकते हैं। कुछ मामलों में, भौतिक चिकित्सा भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसमें संतुलन और स्ट्रेचिंग पर ज़ोर दिया जाता है।

मोहम्मद अली

दुनिया के सबसे महानतम खिलाड़ियों में शुमार बॉक्सर मोहम्मद अली सांस लेने में तकलीफ की बीमारी से जूझ रहे थे जो कि पार्किंसन नामक बीमारी की वजह से हुई थी| 32 साल तक पार्किंसन से लड़ने के बाद अमेरिका के एक अस्पताल में 3 जून को उन्होंने आखिरी सांस ली|

तीन बार के हैवीवेइट चैंपियन मोहम्मद अली को न सिर्फ सबसे महान बॉक्सर माना जाता है बल्कि उन्हें दुनिया के सबसे महानतम खिलाड़ियों में से एक माना जाता है| उन्हें बीबीसी और स्पोर्ट्स इलेस्ट्रेडेट ने पिछली 'सदी का सबसे महानतम खिलाड़ी' चुना था|

'द ग्रेटेस्ट' निकनेम वाले मोहम्मद अली का जन्म 17 जून 1942, अमरिका में हुआ था| 6 फीट 3 इंच लंबे अली का शुरुआती नाम कैसियस मर्सेलस क्ले है| जिसे 1964 में 22 वर्ष की उम्र में अली सॉनी लिस्टन को हराकर पहली बार वर्ल्ड हैवीवेट चैंपियन बने थे| इसके बाद उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया था और फिर मोहम्मद अली के नाम से मशहूर हुए| अली तीन बार वर्ल्ड हैवीवेट चैंपियन रहे|

मोहम्मद अली ने अपने जीवन में कुछ 61 फाइट लड़ी, जिनमें से 56 मुकाबले में उन्होंने जीत हासिल की और सिर्फ 5 बार ही वह हारे|उनके नाम 1960 रोम ओलंपिक में जीता लाइट हैवीवेट गोल्ड मेडल भी दर्ज है| वह 1981 में बॉक्सिंग से रिटायर हुए थे| मोहम्मद अली ने चार शादियां की थीं, जिनसे उनको कुल नौ बच्चे (7 बेटे और दो बेटियां) हुए| आइए जानें महान बॉक्सर मोहम्मद अली से जुड़ी 10 अनजानी बातें|

साइकिल चोरी की वजह से बने बॉक्सर: मोहम्मद अली के बॉक्सर बनने की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है| अली जब 12 वर्ष के थे तो उनके पिता ने उन्हें एक साइकिल गिफ्ट की थी| लेकिन किसी ने अली की साइकिल चुरा ली थी| इस बात से नाराज अली ने एक पुलिस वाले से कहा कि वह उस चोर की धुनाई करना चाहते थे| उस पुलिस वाले का नाम था जो मार्टिन, जो कि एक बॉक्सिंग ट्रेनर था, उसने युवा अली को अपने अंडर में ट्रेनिंग देना शुरू कर दिया|

स्कूल बस से लगाते थे रेस: बचपन में मोहम्मद अली दूसरे बच्चों की तरह स्कूल बस से स्कूल न जाकर बस से रेस लगाकर स्कूल जाया करते थे|

फ्लाइट से मोहम्मद अली को लगता था डर: मोहम्मद अली को फ्लाइट में बैठने और ऊंची उड़ान भरने से बहुत डर लगता था| जब वह 1960 के ओलंपिक में रोम जाने के लिए प्लेन में बैठे तो उन्होंने एयर होस्टेस से उन्हें पैराशूट पहनाने का निवेदन किया था|

मोहम्मद अली गायक, ऐक्टर और कवि थे: शायद बहुत कम लोगों को पता होगा कि मोहम्मद अली एक बेहतरीन बॉक्सर होने के साथ-साथ गायक, ऐक्टर और कवि भी थी| सॉनी लिस्टन को हराकर वर्ल्ड हैवीवेट चैंपियन बनने से महज छह महीने पहले उन्होंने अपना ऐल्बम 'आई एम द ग्रेटेस्ट' रिलीज किया था|

ऑटोग्राफ के लिए कभी मना नहीं किया: मोहम्मद अली जब छोटे थे तो उन्होंने उस समय के फेमस बॉक्सर शुगर रे रॉबिंसन से ऑटोग्राफ मांगा था लेकिन रॉबिंसन ने उन्हें झिड़कते हुए कहा, 'मेरे पास समय नहीं है|' इस बात से अली को इतनी चोट पहुंची कि इसके बाद उन्होंने कभी भी अपने किसी फैन को ऑटोग्राफ के लिए मना नहीं किया|

खुद पर पत्थर फिंकवाकर करते थे प्रैक्टिस: मोहम्मद अली का प्रैक्टिस करने का तरीका बहुत ही निराला था, वह अपने भाई को खुद पर पत्थर फेंकने के लिए कहते थे और उन पत्थरों से खुद को बचाकर प्रैक्टिस करते थे| उनके छोटे भाई रूडी ने बाद में कहा था, 'इससे फर्क नहीं पड़ता कि मैंने कितने पत्थर फेंके लेकिन मेरे द्वारा फेंके पत्थर कभी उन्हें छू भी नहीं पाए|'

रंगभेद के विरोध में फेंक दिया था गोल्ड मेडल! अमेरिका में 60-70 के दशक में रंगभेद किस कदर हावी था इसका उदाहरण मोहम्मद अली के साथ हुई एक घटना से लगाया जा सकता है| अली 1960 में रोम ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतकर जब अमेरिका में एक रेस्टोरेंट में डिनर करने गए तो वेटर ने एक नीग्रो को सर्व करने से मना कर दिया| इस अपमान से आहत अली ने बाहर आकर गुस्से में अपना गोल्ड मेडल यह कहते हुए फेंक दिया कि जिस देश में इस कदर रंगभेद हो, वहां का मेडल मुझे नहीं पहनना है|

एक आदमी को मरने से बचाया: 1981 में मोहम्मद अली ने एक आदमी को मरने से बचाया था| दरअसल बिल्डिंग से कूदकर आत्महत्या की कोशिश कर रहे एक युवक को जब पुलिस कर्मी आत्महत्या न करने के लिए समझाने में असफल रहे तो मोहम्मद अली ने ये काम कर दिखाया| अली उस आदमी के पास वाली खिड़की से उस आदमी से आधे घंटे तक बात की और उसे यह मनाने में कामयाब रहे कि उसकी निजी जिंदगी में चल रही परेशानियां ठीक हो जाएंगी|

सद्दाम हुसैन के चंगुल से छुड़ाए बंधक: इराक के तानाशाह सद्दाम हुसैन ने 1990 में कुवैत पर हमला करके 2000 से ज्यादा विदेशियों को बंधक बना लिया था| बंधकों को छुड़ाने के लिए मोहम्मद अली सद्दाम से बातचीत करने बगदाद पहुंचे| अली के साथ 50 मिनट की बातचीत के बाद सद्दाम ने 15 अमेरिकी बंधकों को छोड़ दिया था|

अली पर लगा था चार साल बैन: 1967 में अमेरिका और वियतनाम युद्ध का विरोध करने की उनकी भारी कीमत चुकानी पड़ी| अली ने न सिर्फ वियतनाम पर अमेरिकी हमले का विरोध किया बल्कि युद्ध के लिए अमेरिकी सेना का हिस्सा बनने से भी इंकार कर दिया| जिसके बाद अली के सारे वर्ल्ड चैंपियनशिप खिताब छीन लिए गए और उन पर बैन लगा दिया गया| 1971 में उनकी अपील पर अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने ये बैन हटाया| इस बैन की वजह से अली को अपने करियर के 4 साल गंवाने पड़े|

बेटी लैला अली भी थी फेमस बॉक्सर: बहुत कम लोगों को पता होगा कि मोहम्मद अली की बेटी लैला अली भी बेहतरीन बॉक्सर रही हैं| अली के नौ बच्चों में सबसे छोटी लैला अली ने 24 मुकाबले लड़े और सभी में जीत हासिल की| वह कभी न हारने वाली बॉक्सर के रूप में रिटायर हुईं|

इनकी वजह से दिव्यांग भी फर्राटे से चला सकेंगे कार....

करीब एक साल तक लगातार मेहनत करने के बाद उनका प्रयास रंग लाया और आठ जून 2016 को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने एक अधिसूचना जारी करके दिव्यांगों के लिए बने विशेष वाहनों को टोल फ्री करने की अधिसूचना जारी कर दी|

राजस्थान के उदयपुर के रवींद्र पांडेय बचपन से ही दिव्यांग हैं| बदकिस्मती के कारण बचपन में ही उन्हें लकवा हो गया, लेकिन रवींद्र ने जीवन से हार नहीं मानी| रवींद्र ने विपरीत हालात में अपना संघर्ष शुरू किया| रवींद्र ने अपने अथक प्रयास से कार को इस तरह से डिजाइन किया है जो किसी भी दिव्यांग के लिए वरदान से कम नहीं है| रवींद्र ने अपने इस डिजाइन का पेटेंट भी करा रखा है| इस कारनामें के लिए रवींद्र का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में भी दर्ज है|

रवींद्र पांडे ने साइंस विषयों के साथ हायर सेकेंडरी की परीक्षा पास की| साइंस और तकनीक में रुचि थी इसलिए इन्होंने आईटीआई में ड्रॉफ्ट्समेन के ट्रेड में डिप्लोमा कर लिया| रवींद्र को आने-जाने में परेशानी होती थी| इसलिए इन्होंने एक कार खरीदी और उसे चलाना भी सीख लिया लेकिन पैरों के सामान्य रूप से काम न करने के कारण ड्राइविंग में परेशानी होती थी| जिसके बाद रवींद्र ने अपनी गाड़ी के लिए एक ऐसी मशीन बनाने की ठान ली जो उनकी जरूरत के मुताबिक हो, यानी ऐसी मशीन जो उनके पैरों का काम कर सके|

काफी कोशिशों के बाद वे एक ऐसी डिवाइस बनाने में कामयाब हुए जो कार के मैकेनिज्म के साथ फिट हो सकती थी और उनकी जरूरतें पूरी कर सकती थी| अब रवींद्र अपनी कार से बेफिक्र होकर उदयपुर से सोमनाथ निकल जाते हैं| इस सफर में उनको रास्ते में कई स्थानों पर टोल देना पड़ा जो काफी आर्थिक बोझ बढ़ाने वाला था| इस सफर ने उनको दिव्यांगों के लिए बने विशेष वाहनों को टोल से छूट दिलाने के

लिए संघर्ष के लिए प्रेरित किया| उन्होंने इसके लिए प्रधानमंत्री कार्यालय और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को पत्र लिखे|

करीब एक साल तक लगातार मेहनत करने के बाद उनका प्रयास रंग लाया और आठ जून 2016 को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने एक अधिसूचना जारी करके दिव्यांगों के लिए बने विशेष वाहनों को टोल फ्री करने की अधिसूचना जारी कर दी| प्राधिकरण ने सभी टोल बैरियरों पर इसके बारे में सूचना लिखने के निर्देश दिए| इन वाहनों से टैक्स वसूली पर टोल संचालकों पर कार्रवाई का भी नियम बनाया गया है| रवींद्र पांडे ने दिव्यांगों के लिए ऐसी डिवाइस बनाई जिससे कार सिर्फ हाथों के उपयोग से ड्राइव हो सकती है| उन्होंने जब इस तरह की कार से 70 हजार किलोमीटर की ड्राइव पूरी कर ली तो लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने उनका नाम अपनी रिकॉर्ड लिस्ट में शामिल किया|